व्यावसायिक जवाबदेही के परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों के व्यावसायिक दबाव का अध्ययन

डॉ. मधु गुप्ता* और विनीता सिंह**

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों की व्यावसायिक जवाबदेही के परिप्रेक्ष्य में व्यावसायिक दबाव का अध्ययन करना था। शोध अध्ययन हेतु प्रतिदर्श के रूप में माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत 150 शिक्षकों का चयन आकस्मिक विधि से किया गया। व्यावसायिक जवाबदेही के मापन हेतु महेश कुमार मुछाल व सतीश चन्द्र (2011) द्वारा निर्मित शिक्षकों की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही मापनी तथा व्यावसायिक दबाव के मापन हेतु डॉ0 के0 एस0 मिश्रा व पूनम द्वारा निर्मित शिक्षक दबाव मापनी का प्रयोग किया। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात सांख्यिकीय प्रविधियों को प्रयुक्त किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषणोपरान्त महिला शिक्षकों की तुलना में पुरूष शिक्षकों में व्यावसायिक जवाबदेही व व्यावसायिक दबाव अधिक पाया गया। स्थायी व अस्थायी शिक्षकों की व्यावसायिक जवाबदेही में कोई सार्थक अन्तर दृष्टिगोचर नहीं हुआ परन्तु अस्थायी शिक्षकों की तुलना में स्थायी शिक्षकों में व्यावसायिक दबाव उच्च स्तर का परिलक्षित हुआ। निम्न जवाबदेही वाले शिक्षकों में, उच्च जवाबदेही वाले शिक्षकों की तुलना में, उच्च व्यावसायिक दबाव देखा गया।

प्रमुख शब्द– विद्यालय वातावरण, डीपीईपी, सर्व शिक्षा अभियान, नामांकन एवं ठहराव

प्रस्तावना

हुमायुँ कबीर का वक्तव्य है ''शिक्षक ही राष्ट्र के भविष्य निर्माता हैं।'' शिक्षक अपने सद्प्रयासों से बालक का सफल मार्गदर्शन एवं उसके व्यक्तित्व का संतुलित विकास कर उसे सफल नागरिक बनाता है। इस प्रकार वह बालक के साथ–साथ समूचे समाज तथा राष्ट्र का कल्याण करता है। किन्तु वर्तमान परिदृश्य में शिक्षक की वह प्रतिमा अदृश्य है जो प्राचीन काल से गुरू को ब्रह्मा, विष्णु व महेश के रूप में पूज्यनीय थी। आज शिक्षक अपनी गरिमा खोकर वेतनभोगी मात्र बनकर रह गया है। वाचस्पति, अविनाश (2011) का लेख 'छात्र और शिक्षक' वर्तमान शिक्षकों का आईना दिखाती एक कोशिश है–

''स्कूल में जाओ और दिनभर मजे लेकर लौटो। जब बच्चों को मारना–पीटना ही कानूनन मना हो गया तो फिर मास्टर क्यों दिमाग की मारा–मारी करें ?आज मास्टर का काम तो आधे दिन स्कूल जाना, मेल करना, गपियाना और घर लौट आना रह गया है। अधिक सयाने मास्टर तो कोचिंग क्लास भी लेते हैं। कुल मिलाकर शिक्षा का धंधा खूब लाभ और दाम का है, इसमें माइंड तो खर्च ही नहीं होता।''

अतः शिक्षक न तो शिक्षण कार्य को अपनी जिम्मेदारी समझते हैं और न ही शिक्षण कार्य के प्रति जवाबदेही निभाते हैं। शिक्षकों की जवाबदेही से तात्पर्य है कि शिक्षक दिये गए उत्तरदायित्वों को किस मात्रा व किस सीमा तक निभाता है। ऐसा न करने पर वह कारण बताने हेतु बाध्य होता है। जवाबदेही अथवा प्रतिबद्धता किसी अधिकारी द्वारा सौंपे गए कार्य को गुणात्मक एवं सर्वोत्तम रूप से अधिकारी के निर्देशन अनुरूप करने का बंधन एवं कार्य है। शिक्षण सार्वकालिक सम्मानजनक व्यवसाय है, अतः इसमें प्रवेश करने के पश्चात् शिक्षक उत्तरदायित्वपूर्ण हो जाते हैं। शोध (श्रीवास्तव व प्रतिभा 2006 तथा पण्डा, बी.बी. 2004) परिणाम दर्शाते हैं कि अधिकतर शिक्षकों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति उच्च प्रतिबद्धता पायी गयी।

शिक्षा की गुणवत्ता हेतु शिक्षक को अपना कार्य पूरी मेहनत, लगन, ईमानदारी व जवाबदेहीपूर्ण तरीके से करना चाहिए। प्रभावी शिक्षक शिक्षण को एक मिशन की तरह लेते हैं (मैती, रूबीना 2008)। अन्य शोध (गुप्ता, एम. सेन, 2001) स्पष्ट करता है कि अच्छे शिक्षक के व्यावसायिक मूल्यों के प्रति समस्त विद्यार्थी एकमत है। इन व्यावसायिक मूल्यों में सर्वप्रथम स्थान जवाबदेही का है।

परन्तु संगठन के प्रति प्रतिबद्धता कार्यभार द्वारा प्रभावित होती हैं और यही कार्यभार व्यावसायिक दबाव

*विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, कुँ आर0सी0 महिला महाविद्यालय, मैनपुरी, उत्तर प्रदेश।
**प्रवक्ता, धर्मसमाज कॉलेज, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश।

का मुख्य कारण होता है (विलेरी विल्सन, 2002)। अधिकांश शिक्षक व्यावसायिक शिक्षणकर्त्ता के तौर पर वर्तमान विद्यालयों की अपेक्षाओं के प्रति दबावग्रस्त रहते हैं। जब यह दबाव जमंबीमत इनतद वनज में परिणत होता है, तो यह शिक्षक के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालता है जिसका प्रभाव छात्रों व अन्य कर्मचारियों पर भी पड़ता है। आधुनिक युग अत्यन्त तेज गति से भागते तकनीकी जीवन का प्रतीक बन गया है, जो शिक्षण हेतु कठिन परिस्थितियाँ, चुनौतियाँ व अपेक्षायें प्रस्तुत करता है। जिससे अन्य व्यवसायों की अपेक्षा शिक्षण व्यवसाय में दबाव अधिक रहता है। इसकी पुष्टि शोध अध्ययन (विश्नोई उन्नति, 2009) से भी होती है जिसमें कॉलेज शिक्षकों ने एक्जिक्यूटिव्स की अपेक्षा अधिक दबाव प्रदर्शित किया।

शिक्षक के व्यावसायिक दबाव व जवाबदेही स्तर की जटिलता को देखते हुए शोधार्थिनी ने महसूस किया कि क्या महिला व पुरूष शिक्षकों की व्यावसायिक जबावदेही व व्यावसायिक दबाव में कोई अन्तर होता है?क्या स्थायी या अस्थायी रूप से नियुक्त शिक्षकों की व्यवसायिक जबावदेही एवं व्यावसायिक दबाव में अन्तर होता है? क्या व्यावसायिक जबावदेही व्यावसायिक दबाव को प्रभावित करती है ? वर्तमान अध्ययन इसी जिज्ञासापूर्ति हेतु किया गया एक प्रयास है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. महिला व पुरूष शिक्षकों के व्यावसायिक जबावदेही का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. महिला व पुरूष शिक्षकों के व्यावसायिक दबाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. स्थायी व अस्थायी शिक्षकों के व्यावसायिक जबावदेही का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. स्थायी व अस्थायी शिक्षकों के व्यावसायिक दबाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. उच्च व निम्न व्यावसायिक जवाबदेही वाले शिक्षकों के व्यावसायिक दबाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनायें

1. महिला व पुरूष शिक्षकों की व्यावसायिक जवाबदेही में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. महिला व पुरूष शिक्षकों के व्यावसायिक दबाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. स्थायी व अस्थायी शिक्षकों के व्यावसायिक जवाबदेही में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
4. स्थायी व अस्थायी शिक्षकों के व्यावसायिक दबाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
5. उच्च व निम्न व्यावसायिक जबावदेही वाले शिक्षकों के व्यावसायिक दबाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन के संदर्भ में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि को प्रयुक्त किया गया।

प्रतिदर्श

वर्तमान शोध के संदर्भ में गाजियाबाद जिले में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत् 150 शिक्षकों का आकस्मिक विधि द्वारा चयन किया गया। चयनित प्रतिदर्श में से उच्च व निम्न व्यावसायिक जवाबदेही वर्ग के चयन के निमित्त चयनित 150 शिक्षकों के व्यावसायिक जवाबदेही सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान व मानक विचलन मान ज्ञात किया गया। उच्च व्यावसायिक जबावदेही वर्ग के रूप में उन शिक्षकों का चयन किया गया जिनके व्यावसायिक जवाबदेही प्राप्तांकों (ड़१ज्ञ) से अधिक थे व निम्न व्यावसायिक जवाबदेही वर्ग के रूप में उन शिक्षकों का चयन किया गया जिनके व्यावसायिक जवाबदेही प्राप्तांक (ड.1ज्ञ) से कम थे। चयनित प्रतिदर्श का वितरण तालिका–1 में प्रस्तुत किया गया है–

तालिका–1

चयनित प्रतिदर्श का यौन–भिन्नता, नियुक्ति की प्रकृति व व्यावसायिक जवाबदेही के अनुसार वितरण

समूह	यौन–भिन्नता		नियुक्ति की प्रकृति		व्यावसायिक जवाबदेही		
	महिला	पुरूष	स्थायी	अस्थायी	उच्च	निम्न	औसत
संख्या	89	61	65	85	36	38	76
कुल	150		150		150		

उपकरण–

वर्तमान शोध अध्ययन के सन्दर्भ में निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया–

1. शिक्षकों की व्यावसायिक जवाबदेही के मापन हेतु महेश कुमार मुछाल व सतीश चंद (2011) द्वारा निर्मित शिक्षकों की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही मापनी।
2. शिक्षकों की व्यावसायिक दबाव के मापन हेतु डॉ0 के.एस.मिश्रा एवं पूनम द्वारा निर्मित शिक्षक दबाव मापनी।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

एकत्रित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात प्रविधियाँ प्रयुक्त की गई।

परिणाम

एकत्रित प्रदत्तों के विश्लेषणोपरान्त प्राप्त परिणाम निम्नानुसार हैं–

तालिका–2

शिक्षकों के व्यावसायिक जबावदेही सम्बन्धी प्राप्तांकों के मध्यमान,मानक विचलन व क्रान्तिक अनुपात

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
महिला	89	137.73	7.5	5.97	<.01
पुरूष	61	140.60	8.8		
स्थायी	65	139.15	9.45	0.64	>.05
अस्थायी	85	138.85	7.65		

तालिका (2) में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि–

1. महिला व पुरूष शिक्षकों के व्यावसायिक जबावदेही में सार्थक अन्तर है। इसकी पुष्टि क्रान्तिक अनुपात (5.97), जो .01 स्तर पर सार्थक है, से भी होती है। अतः महिला शिक्षकों की अपेक्षा पुरूष शिक्षकों में व्यावसायिक जबावदेही उच्च स्तर की है।
2. स्थायी व अस्थायी शिक्षकों के व्यावसायिक जबावदेही में कोई अन्तर नहीं है, क्योंकि दोनो समूहों के लिये प्राप्त क्रान्तिक अनुपात (0.64) .05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

तालिका– 3

शिक्षकों के व्यावसायिक दबाव सम्बन्धी प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन व क्रान्तिक अनुपात

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
महिला	89	103.94	23.90	5.77	< 0.01
पुरूष	61	108.60	32.90		
स्थायी	65	108.40	34.60	4.22	< 0.01
अस्थायी	85	104.30	36.40		

तालिका (3) में प्रदर्शित परिणामों का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि–

1. महिला व पुरूष शिक्षकों के व्यावसायिक दबाव मे सार्थक अन्तर है, क्योंकि प्राप्त क्रान्तिक अनुपात (5.77) .01 स्तर पर सार्थक है। अतः महिला शिक्षकों की अपेक्षा पुरूष शिक्षकों में व्यावसायिक दबाव उच्च स्तर का है।
2. स्थायी शिक्षकों में व्यावसायिक दबाव, अस्थायी शिक्षकों की तुलना में, उच्च स्तर का परिलक्षित हो रहा है। जिसकी पुष्टि उक्त दोनों समूहों के व्यावसायिक दबाव सम्बन्धी प्राप्तांकों के क्रान्तिक अनुपात मान (4.22) से भी होती है जो .01 स्तर पर सार्थक है।

तालिका 4

उच्च व निम्न व्यावसायिक जबावदेही वाले शिक्षकों के व्यावसायिक दबाव सम्बन्धी प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन व क्रान्तिक अनुपात

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
उच्च	36	200.90	22.80	12.93	< 0.01
निम्न	38	215.90	27.70		

तालिका (4) में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि उच्च व निम्न व्यावसायिक जबावदेही वाले शिक्षकों के व्यावसायिक दबाव में सार्थक अन्तर है। स्पष्ट है कि उच्च व्यावसायिक जवाबदेही वाले शिक्षकों की अपेक्षा, निम्न जबावदेही वाले शिक्षकों में व्यावसायिक दबाव उच्च स्तर का है। इसकी पुष्टि क्रान्तिक अनुपात(12.93) जो .01 स्तर पर सार्थक है, से भी होती है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवरण के आधार पर निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं–

1. महिला शिक्षकों की तुलना में पुरूष शिक्षकों में व्यवसायिक जबावदेही उच्च स्तर की है।
2. महिला शिक्षकों की तुलना में पुरूष शिक्षकों में व्यवसायिक दबाब भी उच्च स्तर का है।
3. स्थायी व अस्थायी शिक्षकों की व्यवसायिक जबावदेही में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. अस्थायी शिक्षकों की तुलना में, स्थायी शिक्षकों में, व्यवसायिक दबाव उच्च स्तर का है।
5. निम्न व्यवसायिक जवाबदेही वाले शिक्षकों में, उच्च व्यवसायिक जवाबदेही वाले शिक्षकों की तुलना में, व्यवसायिक दबाव उच्च स्तर का है।

संदर्भ

कबीर, हुमायूँ सन्दर्भित शर्मा, कुसुम (2012) : विद्यालय प्रशासन एवं स्वास्थ्य शिक्षा. आगरा : राधा प्रकाशन मन्दिर; पृ0स0 117.

गुप्ता, एम0 सेन (2001) : पर्सनल एण्ड प्रोफेशनल वैल्यूज ऑफ एन इफेक्टिव टीचर. इण्डियन जरनल ऑफ वैल्यू एजूकेशन; वॉ 01; जुलाई.

गैरेट, एच0ई0 (1985) : स्टेटिस्टिक इन सॉइक्लोजी एण्ड एजूकशन. मुम्बईः वकील्स फीफर एण्ड साइमोन्स लिमिटेड.

जी, वेंग व अन्य (2001) : एप्रेजल ऑफ ऑक्यूपेशनल स्ट्रेस एण्ड स्ट्रेन इन प्राइमरी एण्ड सेकण्डरी स्कूल टीचर्स. भ्नं गचगप ।मवं गनम गनम ठंव;सितम्बर; वॉ 32(3) ;पृ0 सं0 392–5

बडोला, सुनीता (2009) : आइडेन्टिफिकेशन ऑफ स्ट्रेस अमंग स्कूल टीचर्स. इण्डियन जरनल ऑफ साइकोमेट्री एण्ड एजूकेशन; वा0 40; पृ0सं0 90.

बैस्ट, जॉन डब्ल्यू एवं खान, जेम्स वी0 (2004) : रिसर्च इन एजूकेशन. नई दिल्ली. प्रेन्टिस हॉल ऑल इण्डिया प्रा0लि0.

मैती, रूबीना (2008) : शिक्षक प्रभावशीलता एवं मूल्य : माध्यमिक विद्यालयी शिक्षकों पर एक अध्ययन. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका; जनवरी–जून; वा. 27; पृ0–17.

वाचस्पति, अविनाश (2011) : छात्र और शिक्षक, दैनिक जागरण; 7 सितम्बर; पृ0–8.

विल्सन, विलेरी (2002) : फीलिंग द स्ट्रेन–एन ओवरव्यू ऑफ द लिटरेचर ऑन टीचर्स स्ट्रेस. द स्कॉटिश काउन्सिल फॉर रिसर्च इन एजूकेशनल रिसर्च रिपोर्ट; नं0 109, ISBN1860030688.

विश्नोई, उन्नति (2009) : महाविद्यालयी शिक्षक तथा एक्जिक्यूटिव्स के व्यावसायिक दबाव स्तर में अन्तर. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका; जनवरी–जून; वा0 28; पृ0–19.

श्रीवास्तव, नलिनी व प्रतिभा (2006) : प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता. अध्यापक शिक्षा; अक्टूबर; पृ0–72.